अनुक्रमणिका

प्रकाशकीय	३
संपादकीय	४/५
सूक्तियाँ	
'अ'	७-१०
'अ-आ'	११
'आ-इ-ई-उ-ए'	१२
'ए-ऐ-क'	१३
'क'	१४
'क-ख-ग'	१५
'च-ज-त'	१६
'त-द'	१७
'द-ध'	१८
'ध-न'	१९
'न'	२०-२२
'न-प'	२३
'प'	२४-२५
'प-फ-ब-भ'	२६
'भ'	२७
'म'	२८
'म-य'	२९
'य-र'	३०
'ल-व'	३१
'व'	३२-३३
'व-श-श्र-स'	३४
'स'	३५-३७
'स-ह'	३८
'ह-त्र-ज्ञ'	३९
सुभाषित	
लम्ब-१	४०
लम्ब-२	४७
लम्ब-३	५४
लम्ब-४	५६
लम्ब-५	५७
लम्ब-६	५९
लम्ब-७	६४
लम्ब-९-१०	६८
लम्ब-११	६९

आचार्य वादीभसिंह कृत क्षत्रचूड़ामणि ग्रन्थ से

संकलित

सूक्तिसंग्रह

'अ'

१. **अकुतोभीतिता भूमेर्भूपानामाज्ञयान्यथा** ।।३/४२।।
राजाओं की आज्ञा से भूमण्डल पर कहीं से भी भय नहीं रहता।

२. **अङ्गजायां हि सूत्यायामयोग्यं कालयापनम्** ।।३/३८।।
कन्या के जवान हो जाने पर विवाह के बिना काल बिताना अनुचित है।

३. **अङ्गारसदृशी नारी नवनीतसमा नरा:** ।।७/४१।।
स्त्री अंगारे के समान तथा पुरुष मक्खन के समान हैं।

४. **अजलाशयसम्भूतममृतं हि सतां वच:** ।।२/५१।।
सज्जनों के वचन जलाशय के बिना ही उत्पन्न हुए अमृत के समान हैं।

५. **अञ्जसा कृतपुण्यानां न हि वाञ्छापि वञ्चिता** ।।८/६७।।
सच्चे पुण्यवान पुरुषों की इच्छा भी विफल नहीं होती।

६. **अतर्क्यं खलु जीवानामर्थसञ्चयकारणम्** ।।३/१२।।
मनुष्यों के धन संचय का कारण कल्पनातीत है।

७. **अतर्क्यसम्पदापद्भ्यां विस्मयो हि विशेषत:** ।।१०/४६।।
अकस्मात् सम्पत्ति और विपत्ति के आने से विशेषरूप से आश्चर्य होता है।

८. **अत्यक्तं मरणं प्राणै: प्राणिनां हि दरिद्रता** ।।३/६।।
दरिद्रता मनुष्य के लिए प्राणों के निकले बिना ही जीवित मरण है।

९. **अत्युत्कटो हि रत्नांशुस्तज्ज्ञवेकटकर्मणा** ।।११/८४।।